Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi
Gans
1

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

13. A. 41.
Hindi Gans 1

Bālaśikshā

Balshikshā

बालशिक्षा

जिस्को

श्रीमद्विद्वज्जन जेगीयमान यशश्शर-
च्चन्द्र धवलीकृत दिङ्मण्डल श्री १०८ श्रीमन्
महाराजाधिराज रामसिंह वीरेश बूंदी म-
ण्डलाधिपति की

आज्ञानुसार

सकल विद्यारसिकास्पद गुणि गण मण्डली
भूषित पाण्डित्याद्यनेक गुण मण्डित
श्री पण्डित गङ्गासहाय उक्तराज्यके
प्रधान मन्त्रीने निर्म्माण किया ॥

स्थान लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरके यन्त्रालय में मुद्रित हुई

जूलाई सन् १८८१ ई० ॥

Bālaśikshā

Balshikshā

बालशिक्षा

जिस्को

श्रीमद्विद्वज्जन जेगीयमान यशश्शर-
च्चन्द्र धवलीकृत दिङ्मण्डल श्री १०८ श्रीमन्
महाराजाधिराज रामसिंह वीरेश बूंदी म-
ण्डलाधिपति की

आज्ञानुसार

सकल विद्यारसिकास्पद गुणि गण मण्डली
भूषित पाण्डित्याद्यनेक गुण मण्डित
श्री पण्डित गङ्गासहाय उक्तराज्यके
प्रधान मन्त्रीने निर्म्माण किया ॥

स्थान लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरके यन्त्रालय में मुद्रित हुई

जूलाई सन् १८८१ ई० ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

बालशिक्षा ॥

ध्यायामिचित्तेपरमेशितारं नमामिमाता पितरौचभक्त्या ॥ श्रीरामसिंहंक्षितिपाल मौलिम्मुहुर्जयाशीर्वचनैर्गृणामि ॥ १ ॥ श्रीरामसिंहाख्यमहीमहेन्द्राऽनुज्ञा प्रसादक्षपितप्रमादः ॥ गङ्गासहायोनृगिराभिधत्ते संक्षेपतः काञ्चनबालशिक्षाम् ॥ २ ॥

हे विद्यार्थियो तुम प्रातःकाल उठके परमेश्वर का स्मरणकरो फेर

माता पिता बडे भाई वगैरह जो दर्जे मैं बडेहों उनको बडे आदर से प्रणाम करो और जरूरी शरीर के कामोंको करके पाठशाला के जाणे का समय न आवे तब तक पहला पाठ यादकरो फिर वक्त पर रिवा-जके अनुसार अदब के कपड़े पहन के पाठशाला को जावो तो रास्ते मैं किसी से मत लड़ो और किसी बुरे आदमी से मत बोलो कूदते फांदते मत चलो कुलीन लोकों की तरह गर्दन नीची किये हुवे जावो कुत्ता बिल्ली वगैरह किसी जानवर को मत छेड़ो होसके तोअपनी सन्थाको

चित्तमैं याद करते चलो परन्तु ऐसे सावधान रहो कि तुम्हारा किसी को धक्का न लगे और न किसी का धक्का तुम को लगे कोई विद्यार्थी मिले तो उसके साथ प्रेमसे विद्या की बात करते चलो जब तुम पाठ शाला मे पहुंचो तो बडे आदर से सिर झुकाकर गुरुजी को प्रणाम करो अर जो तुमसे विद्या वगैरे मे अधिक हों उनको बी सिर झुकाके नमस्कार करो फेर बराबर केहों उनको करो इसतरह जिस जिस को जैसा जैसा मुनासिब हो वैसा करके अपनी जगह बैठो और नि-

त्य की रीति से लिखने पढने का अभ्यासकरो हाथ पैर फैलाना ह-सना खांसना सामने उबासीलेना अंगडाई तोडना आपस मै सैनक-रना हाथ चुटकी ताली दांत बजा-णा मुह फाडना नाक मुख मै अंगु-ली डालना जमीं कुचरना तिनका तोडना पैर वा गुप्त अंग की तर्फ हाथ लगाना ऊंची गर्दन करना मूछ डाढीके बालों का मुंह मै लेणा मुख की सूरत और तरह बनाना इत्यादि वृथा और बे अदबी की चेष्टा मत करो जिसके उघडने से मर्यादा की हानि हो ऐसे अङ्ग को

मत उघडने दो वृथा बात मतकरो पुस्तक पर ध्यानरक्खो किसी की बात पर कान मत लगावो सन्था ओर परीक्षा के पहला ओर पीछे गुरुजी को प्रणाम करो ओर कोई तुम्हारी परीक्षा लेनेवास्ते पण्डित या हाकिम आवै तो बी उसी तरह नमस्कार प्रणाम आशीर्व्वाद स-लाम इनमै जो मुनासिब हो पहले ओर पीछे बी करो शब्दोंका उच्चा-रण अच्छी तरह स्पष्टता से करो किसी जगह भूलजावो तो अपने मित्रों से पूछलो बारबार गुरु जी को तङ्ग मतकरो जिस् वक्त दूसरे

को पढाते हों उस् वक्त विशेष करके मत पूछो जब अवकाश देखो तब बेशक पूछो सब पाठशालाके विद्यार्थियों को अपने मित्र समझो कोई तुम से पूछे तो उस्को बडी नरमी ओर प्यार से बतावो इस मैं देर ओर आलस्य मतकरो आपस मैं हठ बैर ओर अभिमान मत करो किसी से करड़ी जबान मत बोलो ओर पाठशाला से छुट्टीहो उसवक्त गुरुजीको ओर पाठशाला के विद्यार्थियों को ऊपर लिखी रीति सैं प्रणाम नमस्कार आशीर्व्वाद करके घरको आते वक्त रास्तेमैं बी पहली

रीति से आवो घरमै कोलाहल कू-
दना फांदना मतकरो प्रथमतो पाठ
को यादकरो मन न लगे तो कोई
सहज सा खेल खेलो जिस्में चोट
लगनेका डर न हो अथवा तुम्हारे
घरमै बडे लोक जो काम करते हों
उस्को ध्यान लगाकर देखो परन्तु
तुम उस्मै अपना हाथ मत डालो
ओर जब तक कोई तुम से किसी
चीजके उठाने धरने को न कहे तब
तक हाथ मत लगावो ओर जब
कोई कहे तो उस् काम को बडी
सावधानी से करो कोई घरका या
बाहिर का आदमी तुम पर क्रोध

करे या नाराज होवे तो उसको जैसे बने तैसे राजीकरो रात को शीघ्रसो जाने का स्वभाव मतकरो भाई बहनों मै बैठकर अपने पाठ कीया और तरहकी अच्छी अच्छी बातैं करो ओर अपने पुस्तक को बडी सावधानी से रक्खो कबी मैला नहोवै कामके वक्त बडी सा-वधानी से धीरे धीरे खोलो ओर जिल्दवाले पुस्तक को चौडा मत करो नहीं तो जल्द फटेगा पुस्तक परही क्या बात है कपड़े बरतन खिलौने वगैरह किसी चीज को बिगडने मत द्यो किसी चीज को

घर से बाहर मतडालो मैले कपड़े मत पहनो माता पिता गुरु स्वामी बडा भाई इत्यादिक के वचन को बडे आदर से मानो उसमे अपनी चतुराई और दोषारोपण मतकरो जिस् काम को वह बुरा कहें उस् मै कदाचित् मन न लगावो जिस् को भला कहैं उसमै बहुत ध्यान लगावो उनकी शिक्षा पर कानधरो उनके हुक्म से कबी चित्त को मत फेरो इससे उनके मनमै दुःखहोता है और तुम से कुछ अपराध बन जावे तो बिन पूछेही उन् से सच सच कहदो कदाचित् वहही पहला

करे या नाराज होवे तो उसको जैसे बने तैसे राजीकरो रात को शीघ्रसो जाने का स्वभाव मतकरो भाई बहनों मे बैठकर अपने पाठ कीया और तरहकी अच्छी अच्छी बातें करो और अपने पुस्तक को बडी सावधानी से रक्खो कबी मैला नहोवै कामके वक्त बडी सा-वधानी से धीरे धीरे खोलो और जिल्दवाले पुस्तक को चौडा मत करो नहीं तो जल्द फटेगा पुस्तक परही क्या बात है कपड़े बरतन खिलौने वगैरह किसी चीज को बिगडने मत दो किसी चीज को

घर से बाहर मतडालो मैले कपड़े मत पहनो माता पिता गुरु स्वामी बडा भाई इत्यादिक के वचन को बडे आदर से मानो उसमे अपनी चतुराई और दोषारोपण मतकरो जिस् काम को वह बुरा कहें उस् मै कदाचित् मन न लगावो जिस् को भला कहैं उसमै बहुत ध्यान लगावो उनकी शिक्षा पर कानधरो उनके हुक्म से कबी चित्त को मत फेरो इससे उनके मनमै दुःखहोता है और तुम से कुछ अपराध बन जावे तो बिन पूछेही उन् से सच सच कहदो कदाचित् वहही पहलां

पूछें तो बी उसमें अपणी तर्फ से लूण मिरच मत मिलावो इस् बात परदण्ड बी भुगतल्यो जब बडोंका मेल हो तो खडे होके प्रणामकरो जैसा जहां रिवाज हो उस् तरह आदर करो बैठने उठने मै खयाल रक्खो ऐसा न होकि उनकी नजर मै कोई बात अयोग्य दीखे बडी नम्रताके साथ उनसें बोलो ओर कोई शब्दऐसा न कहो जो उनको बुरा लगे यह बात केवल उमर मै बडे हों उनकीही नहीं है किन्तु जो विद्या सम्बन्ध इत्यादिमैअधिकहों उन सबको बडे मानो जो किसी न-

वीन आदमी से एका एकी कामपडे तो जैसी उस्की बात भले आद-मियों से सुनीहो या जैसा उस्का डौल दीखता हो वैसा आदर करो बडों मै सब से अधिक माता पिता हैं इन्का हक तुम्हारे पर इतना है कि परमेश्वर बिना ओर किसी का नहीं उन्को सब तरह प्रसन्नरक्खो कोई करड़ी बात उन्से न कहो जो बात वह कहें उस्को हाथ जोड के नीची गर्दन किये हुवे सुनलो ओर जल्दी सैं उस् काम कूं करो सबका-मों मै उन्से आज्ञा मांगो उन्की इजाजत बिना कोई काम मतकरो

माता पिता के पीछे क्रम से गुरु स्वामी हाकिम बडा भाई और जो सम्बन्ध मै बडे ताऊ चाचाइत्यादि-कहैं उन्काबी बहुत आदर लिहाज रखणा चाहिये इन्से आगे पण्डित और परमेश्वर के भक्त अच्छे स्वभाव और चलणवाले हों इन् सबका आदर रखणा चाहिये ये धनवान् हों चाहे निर्द्धन उमर मै छोटे हों चाहे बडे महाराजाओं की सेवा मै जावो तो डोढी वालों की इजाजत से महाराज के हुजूर मै हाजिरहो और मुजरा सलाम आशीर्व्वाद जो मुनासिब हो देशकी चाल

के अनुसार करके और सभाके लो-
कों को बी यथा योग्यकर्के अपणी
जगह बैठो बैठने का अधिकार न
हो तो खडे रहो दूसरे की जगह
और अपणे अधिकार से ऊंची जग-
ह मत बैठो सब जगह से नजरखैंच
के स्वामीके मुखकी तर्फ देखतेरहो
स्वामी जो कुछ फरमावे उस्को हा-
थ जोड के सुनो और बडी नम्रता
सैं उस्का उत्तर अर्जकरो महाराज
की सभा मै जहां तक बनपड़े थोड़ा
बोलो परन्तु बोलणे के मौके पर
चुपरहणा बी मूर्खता है किसी की
बात मतकाटो अभिमान और ईर्षा

से बात मतकरो बातों मै जहांतक
स्वामी का पक्ष योग्य दीखता होय
तो तुम बी उसी पक्षको पकड़ो अ-
योग्य दीखता होय तो चुप रहो
जिस् बातको तुम अच्छीतरह जा-
णतेहो उस्को बी प्रतिज्ञा की तौर
पर मत कहो बिन पूछे मत कहो
पराये अधिकार की बात मै दखल
मत द्यो आपत्ति और बुरी चाल और
काम का बिगडना इनमै बिन पूछे
बी अच्छी बात कहणा चाहिये झूठ
विश्वास के अयोग्य ओर कडवी
बात मत कहो अपणे कामकी आ-
पही अर्ज मत करो कोई योग्यकर-

ड़ी बातही कहना जरूर होतो ए-
कान्त मैं नर्मीके साथ कहो हाथ पैर
की चेष्टा मैं ऊपर लिखी बात याद
रक्खो स्वामी की गुप्त बात और
मनसूबा किसी से मतकहो स्वामी
के तुल्य वेष ओर चेष्टा मतकरो
बख्शिश् वस्त्रादिक आप पहनो
ओर को मतद्यो स्वामी की सेवा
की चीज को अपणे काम मैं मत
लगावो अपणे हक्क से सिवा एक
पैसा मत ल्यौ जिस् बातसे स्वामी
को नाराज देखो उस्कामको छोड
द्यो ओर जिस् अधिकार पर रहणे
से स्वामी का राजी रखणा मुश-

किल हो उस् अधिकारसे किनारा करो स्वामी से किसी बातको मत छुपावो जहां तक बन पडे स्वामी को जणाके कामकरो स्वामीकेहुक्म की तामील मै जहां तक होसके बिलम्ब मतकरो स्वामी का हर तरह भला चाहो तुमको स्वामीसे मदद न मिलेगी तो ईश्वर अवश्य मदद देगा हे विद्यार्थियो संसारके कामों के निर्बाह वास्ते मनुष्य मै बहुत गुणचाहियें जिन्का लिखणा बिस्तार के भय से इस् पुस्तक मै नहीं किया गया परन्तु बाणी मै सत्य ओर कोमलता मन मै सन्तोष

ओर धैर्य ये च्यार बी गुण होंगे तो तुम्हारे सबदुःख ओर दोष मिटेंगे सत्य वह है किजो बात जिस्तरह देखी सुनी करी जानी गई हो उसको ज्यूं की त्यूं कहदेवे किञ्चित् बी न्यून अधिक न कहे प्रायः आदमी भय लोभ घमण्ड हांसी खुशामद ओर जल्दी में झूठ बोलता है परन्तु झूठ सब ऐबों मैं मुख्य है वचन मैं कोमलता वह है जिस्से सुनने वाले के चित्तको दुःख न हो सन्तोष वहहै कि जिस्से अपणे हक्कके सिवा द्रव्य पर चाहही न हो धैर्य वह है जिस्सें क्रोध दुःख सुख के वक्त

चित्त ज्यूंका त्यूं रहे इनका जुदाजुदा वर्णन और उदाहरण विस्तार के भयसे नहीं किया गया ॥

स्वस्त्यस्तुसर्व जगतांकृपयेश्वरस्य मातुःपितुश्चचरणौकुरुतांशुभानि श्रीरामसिंह नृपतेः कुशलानि सन्तु विद्यार्थिनःसफलयन्तु मदीय शिक्षाम् ॥ १ ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज महाराव राजेत्यादि पदवी विराजमान बुन्दीश्वरश्रीरामसिंहभूयादिष्टगङ्गा सहायकृता बालशिक्षासमाप्ता १ ॥ संवत् १९३८ आषाढ शुक्ल ३ सौम्यबासरे ॥

———